प्रागैतिहासिक काल

भूवैज्ञानिक दृष्टि से पृथ्वी करीब 4.8 अरब वर्ष पुरानी है। प्रारंभ में यह एक गोला मात्र था। इसे ठण्डा होने के बीच कई उथल-पुथल हुए। पृथ्वी की भूवैज्ञानिक समय-सारणी को श्महाकल्पों में विभाजित किया जाता है। प्रत्येक महाकल्प को अनेक कल्पों (Periods) में विभाजित किया जाता है और प्रत्येक कल्प अनेक युगों में बांटा जाता है। अधिकांश विद्वानों का विचार है कि धरती पर आदिमानव का जन्म 56 लाख वर्ष पहले हुआ। परंतु अत्यन्त नूतन युग (30 लाख वर्ष) में मानव पृथ्वी के तात्कालीक वातावरण के अनुरूप अपने को ढालने का प्रयत्न किया। इसके बाद आदिमानव के अनेक रूप बदले। वह काल जिसके लिए कोई लिखित सामग्री उपलब्ध नहीं है, पत्थर के औजार, कुछ हड्डियों के उपकरण तथा कुछ अन्य पुरातात्विक सामग्री आदि तथ्यों के रूप में प्राप्त होते हैं, श्प्रागैतिहासिक काल कहलाता है। प्रागैहिासिक साक्ष्य धरती के ऊपर, गुफाओं में या प्राचीन नदी- निक्षेपों के साथ मिलते हैं।

प्रागैतिहासिक कालीन बिहार

- बिहार राज्य के विभिन्न भागों में पुरातात्विक अन्वेषणों ने स्पष्ट कर दिया है कि इस प्रदेश में मानव निवास का इतिहास ई. पू. लगभग 1 लाख वर्ष तक प्राचीन है ।
- मुंगेर, सारण, वैशाली, गया, पटना, नालंदा आदि से उपलब्ध हुए पाषाण औजारों तथा उपकरणों का संबंध पुरापाषाणकालीन संस्कृति से लेकर नवपाषाणकालीन संस्कृति तक से है।
- सबसे पुराने अवशेष आरंभिक पूर्व-प्रस्तर युग के हैं जो अनुमानतः एक लाख ई. पू. काल के हैं। मुंगेर और नालन्दा जिलों में उत्खनन से पत्थर की कुल्हाड़ी, विभिन्न उपयोग में लाए जाने वाले पत्थर के औजार आदि प्राप्त हुए हैं।
- वाल्मिकीनगर (प. चंपारण) से कुछ पुरा पाषाणकालीन उपकरण मिले हैं।
- मध्यवर्ती प्रस्तर युग (1 लाख से 40 हजार ई. पू.) के अवशेष मुंगेर से प्राप्त हुए हैं।
- मुंगेर से ही परवर्ती प्राचीन प्रस्तर युग (40 हजार से 10 हजार ई. पू.) के अवशेष मिले हैं जो पत्थर से बने हैं। नालन्दा के जेठियन से प्रारंभिक पाषाणकाल के कुल्हाड़ी, चाकू आदि मिले हैं।
- मुंगेर से ही मध्य प्रस्तर युग (9 हजार से 4 हजार ई. पू.) के अवशेष प्राप्त हुए हैं जो पत्थर के औजार हैं ।
- नव-प्रस्तर युग (25 सौ से 15 सौ ई. पू.) के अवशेष सारण जिले के चिरांद और वैशाली जिले के चेचर से प्राप्त हुए हैं जो पत्थर से बने सूक्ष्म औजार तथा हड्डी से बनी वस्तुएँ हैं।
- ताम्र प्रस्तर युग के परवर्ती चरण के अवशेष सारण जिले के चिरांद वैशाली जिले के चेचर, गया जिले के सोनपुर, पटना जिले के मनेर से प्राप्त हुए हैं। उत्खननों से मृदभांड और मिट्टी के बर्तन प्राप्त हुए हैं।
- विकसित नवपाषाणिक बस्तियों में प्रमुख हैं- चेचर (स्वेतपुर), चिरांद ताराडीह, मनेर तथा सेनुआर
- नम-पाषाण काल के मानव ने कृषि करना सीख लिया था।
- नवपाषाणिक उपकरण नीमबाँध (मुंगेर), केडर (गया), सेनुआर (रोहतास) और चेचर, कुतुबपुर (हाजीपुर) तथा चिरौद (छपरा) में मिले हैं।
- मनुष्य ने छोटे-छोटे पत्थरों के औजार के साथ-साथ धातु के औजारों का उपयोग शुरू कर दिया था। इस युग को ताम्रपाषाण युग कहते हैं ताम्र पाषाणिक संस्कृति के अवशेष सोनपुर, ताराडीह (गया), मनेर (पटना), सेनुआर (रोहतास), माँझी तथा चिरांद (छपरा), चर (हाजीपुर) में मिले हैं।
- पैसरा (मुंगेर) के उत्खनन से पुरापाषाण कालीन एक्यूलरी-संस्कृति से संबंधित उपकरण प्राप्त हुए हैं। एश्लूरी-संस्कृति के लोगों के फूस की झोपड़ियों के अवशेष मिले हैं। उपकरणों के आधार पर यह उन्नत एश्यूलियन काल के ज्ञात होते हैं। इनका समय अनुमानतः 50 हजार से 1 लाख पूर्व रहा होगा।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. इतिहासकारो ने मानवों का उद्‌गम काल लाख वर्ष पूर्व (मध्य प्लीस्टोसीन) माना है-
(a) 7 (b) 8
(c) 9 (d) 10

2. प्रागैतिहासिक काल (पुराकाल से नव प्रस्तर काल) कहलाती है-
(a) अलिखित प्रत्यक्ष स्त्रोत का काल
(b) लिखित स्त्रोत का काल
(c) (a) एवं (b) दोनों
(d) इसमें से कोई नहीं

3. ऐतिहासिक काल (600 ई.पू. ....) कहलाती है-
(a) अलिखित प्रत्यक्ष स्त्रोत का काल
(b) लिखित स्त्रोत का काल
(c) (a) एवं (b) दोनों
(d) इसमें से कोई नहीं

4. पूरा पाषाण काल है-
(a) 8 लाख से 9 हजार ई. पू.
(b) 9 लाख से 10 हजार ई. पू.
(c) 10 लाख से 10 हजार ई. पू.
(d) इसमें से कोई नहीं

5. मध्यपाषाण काल है-
(a) 8 लाख से 5 हजार ई. पू.
(b) 9 लाख से 6 हजार ई. पू.
(c) 10 लाख से 5 हजार ई. पू.
(d) 10 हजार ई. पू. से 6 हजार ई. पू.

6. 6 हजार से 4 हजार ई.पू. का काल कहलाती है-
(a) मध्यपाषाण काल (b) नवपाषाण काल
(c) कैल्कोलिथिक काल (d) कांस्य

7. कैल्कोलिथिक काल हैं-
(a) 2 हजार से 3 हजार ई. पू.
(b) 3 हजार से 3 हजार ई. पू.
(c) 2 हजार से 500 ई. पू.
(d) 5 हजार से 3 हजार ई. पू.

8. कांस्य युग का समय है
(a) 2 हजार से 2 हजार ई. पू.
(b) 3 हजार से 2 हजार ई. पू.
(c) 4 हजार से 2 हजार ई. पू.
(d) 5 हजार से 2 हजार ई. पू.

9. लौह युग का समय है-
(a) 3 हजार से 1000 हजार ई. पू.
(b) 2 हजार से 1000 हजार ई. पू.
(c) 1 हजार से 1000 हजार ई. पू.
(d) इसमें से कोई नहीं

10. बिहार में मानव निवास का इतिहास तक प्राचीन हैं-
(a) 50 हजार वर्ष (b) 80 हजार वर्ष
(c) 1 लाख वर्ष (d) 1 लाख 50 हजार

11. मुंगेर, सारण, वैशाली, गया, पटना आदि से उपलब्ध हुए पाषाण औजारों तथा उपकरणों का संबंध है-
(a) पूरापाषाणकालीन सरकृति से
(b) नवपाषाणकालीन संस्कृति से
(c) पूरापाषाणकालीन संस्कृति से कालीन संस्कृति तक से
(d) इनमे से कोई नहीं

12. वैज्ञानिकों ने प्रारंभिक मानव का नामकरण किया है-
(a) किनगर (b) नियंडरथल
(c) पामाणिक (d) प्लीस्टोसीन

13. वाल्मिकी नगर (प. चम्पारण) से प्राप्त उपकरण किस काल के हैं?
(a) पाषाणकालीन (b) कालीन
(c) कांस्य युग (d) लौह युग

14. मुंगेर से प्राप्त अवशेष किस युग के हैं?
(a) प्रस्तर युग (b) मध्यवर्ती प्रस्तर युग
(c) कांस्य युग (d) लौह युग

15. बिहार में आदिमानव के उपस्थिति के आरंभिक साक्ष्य कहा से प्राप्त हुआ है?
(a) वाल्मिकी नगर (प. चम्पारण)
(b) सारण
(c) मुंगेर एवं नालंदा (d) वैशाली

16. बिहार में आदिमानव के उपस्थिति के आरंभिक साक्ष्य किस युग के हैं?
(a) पूर्व प्रस्तर युग (b) मध्य प्रस्तर युग
(c) नव प्रस्तर युग (d) मध्यवर्ती प्रस्तर युग

17. बिहार में मध्यवर्ती प्रस्तर युग के साक्ष्य मिले हैं-
(a) चेचर से (b) मुंगेर से
(c) चिरांद से (d) पटना से

18. चिरांद (सारण) एवं चेचर (वैशाली) से किस युग के अवशेष प्राप्त हुए हैं?
(a) मध्य प्रस्तर युग (b) पूर्व प्रस्तर युग
(c) मध्यवर्ती प्रस्तर युग (d) नव प्रस्तर युग

19. बिहार में ताम्र प्रस्तर युग के परवर्ती चरण के अवशेष कहाँ से प्राप्त हुए हैं?
(a) चिरांद (सारण) (b) चेचर (वैशाली)
(c) मनेर एवं सोनपुर (d) उपर्युक्त सभी

20. बिहार के संबंध में निम्न में से कौन-सा कथन सत्य है?
(a) यहां पुरातात्विक उत्खनन से पूर्व मध्य एवं उत्तरी पाषाणकालीन पत्थर के औजार एवं उपकरण मिले हैं।
(b) बिहार में आदि मानव निवास करते थे ।
(c) बिहार में सबसे पुराने अवशेष पूर्व पूरापाषाण काल के हैं।
(d) उपर्युक्त सभी

Answer Key

1. (d)	**2.** (a)	**3.** (b)	**4.** (c)	**5.** (d)
6. (b)	**7.** (c)	**8.** (b)	**9.** (d)	**10.** (c)
11. (c)	**12.** (b)	**13.** (b)	**14.** (b)	**15.** (c)
16. (a)	**17.** (b)	**18.** (d)	**19.** (d)	**20.** (d)

ऐतिहासिक काल

वह काल, जिसके इतिहास के विषय में जानने के लिए लिखित स्त्रोत भी उपलब्ध है तथा इन्हें पढ़ा भी जा सकता है। इस अध्ययन के द्वारा किसी समाज के इतिहास द्वारा उसके अतीत को जाना जा सकता है। यहाँ अतीत से हमारा तात्पर्य उस समाज की संस्कृति और सभ्यता से है। संस्कृति के अंतर्गत उस समाज की समस्त क्रिया-कलाप आते हैं जबकि सभ्यता अंर्तगत उसके भौतिक पहलुओं पर विशेष जोर दिया जाता है। बिहार का प्राचीनकालीन इतिहास का अध्ययन हमें अतीत से वर्तमान और भविष्य के लिए सबक लेना भी सिखाता है।

- बिहार का क्षेत्र प्रारंभ से ही उच्चावच की दृष्टि से तीन भागों में विभक्त रही है- 1. हिमालय का पर्वतीय क्षेत्र 2. गंगा का मैदानी भाग तथा 3. दक्षिण का पठार द्य इन तीनों भौगोलिक क्षेत्र में मानवों की कई बस्तियाँ बसी जहाँ विभिन्न संस्कृतियों का जन्म हुआ।
- बिहार के इन तीनों भौगोलिक क्षेत्रों के मानवों ने अपनी सहुलियत व सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए विकास के पथ पर आगे बढ़ते गये थे। इन तीनों ही भौगोलिक क्षेत्रों में निवास करने वाले मनुष्यों ने पुरापाषाणकाल, मध्य पाषाणकाल, नव पाषाणकाल, कैल्कोलिथिक काल, कांस्य युग और लौह युग तक का सफर करते हुए ऐतिहासिक युग में प्रवेश किया था। वाल्मिकी नगर (प. चम्पारण), पैसरा (मुंगेर), जेठियन (नालंदा), चिरांद (सारण), चेचर (वैशाली), सोनपुर (गया), मनेर (पटना), भीमबांध (मुंगेर), केउर (गया). सेनुआर (रोहतास), कुतुबपुर (हाजीपुर), ताराडीह (गया), मांझी (छपरा) आदि स्थानों से प्राप्त अवशेषों से इस बात की पुष्ट जानकारी प्राप्त होती है ।
- किसी भी क्षेत्र विशेष की अपनी एक भौगोलिक संरचना होती है । उस संरचना के अनुरूप वहाँ पर निवास करने वाले मनुष्य अपनी एक सांस्कृतिक परिवेश भी निर्मित करते हैं। कालांतर में ये मगध, अंग, वैशाली तथा मिथिला संस्कृति के रूप में अपनी पहचान बनाई।
- शिकारी और पशुपालन अवस्था के दौर से काफी समय तक जीवन-यापन करने के पश्चात् मगध, अंग, वैशाली तथा मिथिला क्षेत्र में निवास करने वाले मानवों ने कृषि अवस्था में प्रवेश किया। परंतु इस दौर में कृषि के साथ-साथ शिकार तथा पशुपालन से जीविका चलाने वाले उपस्थित रहे।
- जनसंख्या की निरंतर वृद्धि ने कृषि लायक भूमि का भी विस्तार करता गया ।
- मनुष्यों की बढ़ती जरूरतों ने समाज में बाजार की व्यवस्था स्थापित कर दी। बाजारवाद ने शिल्पियों, कारीगरों, श्रमिक वर्गों को प्रश्रय दिया ।
- उत्तरोत्तर विकास ने व्यक्ति के मन में अनेक तरह की जिज्ञासा उत्पन्न कर दी। इस जिज्ञासा-भाव के विकास ने ही व्यक्ति के मन को दर्शन की ओर ले गई, जिसने कालांतर में जैन धर्म, पश्चात् बौद्ध धर्म का प्रार्दुभाव हुआ।
- समाज में तंत्र-मंत्र, जादू-टोना आदि का प्रचलन काफी था। शक्ति उपासक चौत्यालयों से शक्ति प्राप्त करते थे। तात्कालिक समय में जैन धर्म का प्रभाव था।
- जैन धर्मावलम्बी चौत्यालयों में यक्षों की उपासना करते थे। जैन सूत्रों के अनुसार तात्कालिक लोग तेरह यक्षों- पूर्णभद्र, मणिभद्र, श्वेतभद्र, हरितभद्र, सुमनोभद्र व्यतिपातिकभद्र, सुभद्र, सर्वताभद्र, मनुष्य यक्ष, वनाधिपति, वनाहार रूप यक्ष तथा यक्षोत्तम की पूजा-आराधना करते थे। इनमें पूर्णभद्र तथा मणिभ्रद का विशेष महत्व था।
- जातियों की संख्या में वृद्धि, समुदायों के बीच युद्ध दैविय शक्तियों की उपासना एवं सिद्धि प्राप्ति का समय था।
- ऐतिहासिक काल में लिपि का आविष्कार हो चुका था। उस काल की लिपि में लिखी सामग्रियाँ प्राप्त हुई हैं, परन्तु उसे अबतक पढ़ा नहीं जा सका है।
- समाज में नियमों एवं अनुशासन के महत्वों को समझा गया। सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक क्षेत्रों के लिए नियम आदि बनाये गये, जिससे समाज सुदृढ़ होता चला गया। समाज में राजकीय व्यवस्था कायम हुई ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. ऐतिहासिक काल कहलाता है-
   (a) 2000 ई. पू. से 1500 ई. पू. तक
   (b) 1500 ई. पू. से 1000 ई. पू. तक
   (c) 1000 ई. पू. से 600 ई. पू. तक
   (d) 600 ई. पू. के पश्चात
2. ऐतिहासिक काल में प्रचलित था-
   (a) जादू-टोना (b) तंत्र-मंत्र
   (c) सिद्धि उपासना (d) उपरोक्त सभी
3. ऐतिहासिक युग की प्रथा आज के समय में परंपरागत रूप से चली आई है, वह है-
   (a) बहेलिया कार्य (b) सपेरा
   (c) जादू-टोना (d) उपरोक्त सभी
4. ऐतिहासिक युग में बिहार के किस क्षेत्र में मनुष्यों की सर्वाधिक बसावट हुआ था ?
   (a) मगध क्षेत्र (b) गंगा घाटी क्षेत्र
   (c) मिथिला क्षेत्र (d) अंग क्षेत्र
5. ऐतिहासिक युग के किस चौत्यालय से शक्ति उपासक शक्ति प्राप्त करते थे?
   (a) पूर्णभद्र चौत्यालय (b) मणिभद्र चौत्यालय
   (c) (a) एवं (b) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

Answer Key

1. (d) **2.** (d) **3.** (d) **4.** (b) **5.** (c)

●●●

KHAN GLOBAL STUDIES ★ Kisan Cold Storage Campus, Musallahpur, Patna-6 ★ KHAN SIR